। जय बुन्देली । । जय ईसुरी । । जय बुन्देलखण्ड ।

सामाजिक समरसता के लिए एक सशक्त टिप्पणी

मधु-प्याली

रचनाकार

डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन' पी.एच-डी. (बुन्देली सम्राट)

आकाशवाणी, वार्ताकार, कवि, रेडियो रुपक, लेखक, कहानीकार

मधु-प्याली - डॉ. डी.आर. वर्मा

साहित्य वारिधि स्व. श्री रामचरण हयारण मित्र काव्य पाठ सुनते हुए

डॉ. डी.आर. वर्मा
स्व.श्रीमती सुभद्रा देवी पहारिया
को काव्य पाठ सुनाते हुए

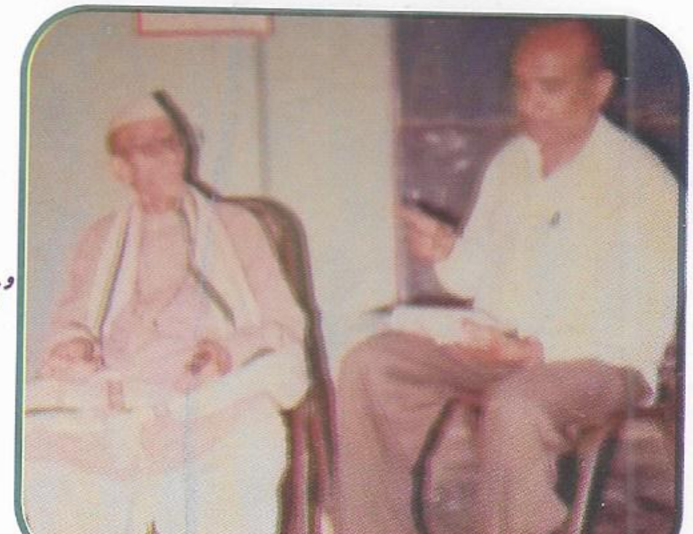

साहित्य मनीषी 'बुन्देली वार्ता'
के संपादक
स्व. श्री कन्हैयालाल शर्मा 'कलश'
को कविता सुनाते हुए
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

दशहरा मिलन समारोह पर हुए कवि सम्मेलन में पधारे हुये
सुकवि गणों के साथ डॉ. डी.आर.वर्मा
दिनांक 30-09-2017

साहित्यकार श्री वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक' का सम्मान करते हुये
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

डॉ. डी.आर.वर्मा 'बेचैन' हास्यकवि पं. हृदयनाथ चतुर्वेदी 'चौबे' मऊरानीपुर को सम्मान पत्र भेंट करते हुये।
साथ में साहित्य प्रेमी श्री गिरवर सिंह यादव 'बड्डे भईया' ।

श्रीमंत मधुकर शाह जूदेव ओरछेश साहित्यकार का अभिवादन करते हुये
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'

।। श्री गणेशाय नमः।।

मधु प्याली

(खंड काव्य)

-डॉ. डी.आर. वर्मा

पी.एच-डी,

संपादक व रचियता

।। जय माँ सरस्वती ।।

जय बुन्देली माँ

बुन्देली धरती पर बुन्देली की कृति समर्पित-

प्रथम संस्करण

राम नवमी विक्रमी संवत् 2075

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक-

डॉ. एस.पी. वर्मा

बी.ए.एम.एस.काया हर्बल प्रोडक्शन फार्मेसी

उरई (जलौन) उ. प्र.

डॉ. एल. पी. वर्मा

प्रोफेसर-नरेन्द्रदेव यूनिवर्सिटी, फैजाबाद उ. प्र.

सहयोग-राशि

150/-- रुपया

मुद्रक

जयभारत ऑफसैट प्रेस

परमट चौराहा, मऊरानीपुर

मो. 9452995903, 9795034525

।। आमुख ।।

"मधु प्याली" खंड काव्य आपके हाथों में है। साहित्य का मूल उद्देश्य लोक मंगल की भावना जागृत करना है। वर्तमान समाज के परिवेश में मधु प्याली का प्रचलन प्रत्येक स्तर पर देखने को मिलता है। मधुपान के दुष्परिणाम भी सर्वत्र देखने को मिल रहे हैं। विभिन्न रसों के माध्यम से मधुपान के प्रति अरुचि उत्पन्न करने वाली घटनाओं का चित्रण किया गया है। कुल मिलाकर इस सामाजिक बुराई का दिग्दर्शन लोकहित के लिए किया गया है। सुधी पाठक गण "मधु प्याली" का पठन पाठन कर अवश्य विचार करेंगे व रसास्वादन करेंगे। पठन पाठन के उपरांत कवि को आशीर्वचन भी प्रदान करेंगे। इति शुभम् !

प्रस्तोता-

डॉ.डी. आर वर्मा पी,एच-डी,

पूर्व प्राचार्य, अखण्डानंद जनता इंटर कालेज, गरौठा

निवासी स्यावरी मो. 9794419115

डॉ. दयाराम वर्मा कौ परिवार

नाम- डॉ. दयाराम वर्मा 'वेचेन'

पूर्व प्राचार्य अखण्डानंद इं.कॉलेज, गरौठा (झाँसी) उ. प्र.

पिताजी- कीर्तिशेष श्री रामसहांय कारीगर आशु कवि बुन्देली

माताजी- कीर्तिशेष श्रीमती लाड़ली (करारा वाली)

पुत्र- १. डॉ. शिवप्रताप वर्मा बी.ए.एम.एस.

२. डॉ. लक्ष्मीप्रसाद वर्मा प्रोफेसर,फिशरी विभाग फैजावाद

भ्राता- १. श्री हरीदास

२.सेवाराम वैद्य

३.डॉ. भरतराम एम.बी.बी.एस. सेवानिवृत्त

स्वास्थ्य निदेशक उ० प्र० सरकार

भतीजे- चि. इं.सुरेन्द्रकुमार से.नि., इं. राजेन्द्रकुमार

इं. महेन्द्रकुमार (केन्द्रीय सर.), इं. धर्मेन्द्रकुमार

अनिलकुमार (डिवी.मैनेजर-यू.को.बैंक दिल्ली)

डॉ. बी.बी. वर्मा

पत्नी- श्रीमती फूवती वर्मा (शिक्षा प्रेमी)

विगत १० वर्षों से फूलवती कोचिंग संस्थान, स्यावरी द्वारा गरीब एवं कन्यों को शिक्षा का ग्रहण करवा रहीं हैं।

निवास- ग्राम-पोस्ट स्यावरी

तहसील- मऊरानीपुर

जिला-झाँसी

उत्तर प्रदेश (बन्देलखण्ड) मो 9794419115

---ooo---

संदेश

जीवन को जो व्यक्ति जिस भाव से देखता है, वह उसे वैसा ही बना देता है। मानव जीवन मधु रस है तो रस-राग-रंग ही जीवन है। जिससे आनन्दानुभूति का आप्लावन होता हे। जो उद्दाम लालसा, प्रेम, रूप-रस का मार्ग खोलता है। जिसमें जीवन के प्रति आसक्ति प्रबल होती है। मधु के माधुर्य से बढ़ती यही आसक्ति ही बीतराग मैं परिवर्तित होने से कभी वितृष्णा के भाव उद्भूत होते हैं जो मद्य काव्य बन जग जीवन को संतृप्त करते हैं। ये भाव सनातन से संसृति बन देव-दनुज और मनुजों में अमृत सोमरस, मधुमय, शराब जैसे अनेक नामों व रूपों में अभिहित होते रहे हैं। इन्हीं रूपों को काव्य में मधुकाव्य कहा गया हे।

मधुकाव्य की व्युत्पत्ति जीवन की भावात्मकता से हुई हे। उमर खैय्याम की रूबाइयां जीवन की एक दृष्टि बनी और जिनकी भाव भूमि में डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' का काव्य अभिप्रसूत हुआ। साहित्य में छाया बाद के कल्पित लोक दृष्टि से विमुख जीवन की यथार्थता उनके इस मधु काव्य में मिली। जिसे साहित्य में हालाबाद कहा गया, ऐसे प्रतीकात्मक काव्य से मानव जीवन को एक नवीन दृष्टि मिली जो आज भी नये मधु काव्य रूपों में विद्यमान है।

डॉ. डी. आर.वर्मा 'बैचेन' सदैव साहित्य में एक नवीनता देने के लिए ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं, जिन्होंने अनेकानेक कृतियों की रचना की है, 'मधु प्याली' काव्य कृति में मधु कलश, मधु-घट, मधु-प्याला के आगे की जीवन दृष्टिसंजोई गई हे। इसमें

कलश घट और प्याला के आगे प्याली रूप प्रदान किया गया है। यहीं नहीं कृति में कवि ने मधु की बढ़ती आसक्ति से समाज में संभावित विकारों से आगह कर कवि के दायित्व का निर्वहन किया है। इससे कृति को विशेषता प्रदान की गई हे। इसका सार खंड जीवन का सार संदेश है।

अतएव ऐसे मधु प्याली के रचियता को साधुवाद व मंगल कामना प्रषित हैं।

(रामनारायण शर्मा)
राष्ट्रीय याहित्य ऐकेडमी दिल्ली का भाषा सम्मान प्राप्त
साहित्य मार्तण्ड, बुन्देलखण्ड गौरवसम्मान प्राप्त
निवास-६६५/३ सिविल लाइन्स,
रानी लक्ष्मीबाई पार्क के सामने, झाँसी, बन्देलखण्ड
मो. ९८३९१६१८२७

आशीर्वाद,

डॉ. दयाराम 'बेचैन' मूलतः बुन्देली के समर्थ कवि हैं। ''मधुप्याली'' कृति की रचना इन्होंने हिन्दी (खड़ी बोली) काव्य में की है। जहाँ इस कृति के विषय का सम्बन्ध है, इन्होंने ८ खण्डों की भाव भाषा विभक्त किया है। इन खण्डों की भाषाभाव के अनुसार ही है। इनकी यह नवीन उद्‌भावना है जो समाज के लिए हितकारी होगी। कवि ने 'सार खंड' में लौकिक व पारलौकिकता का चित्रण बड़े सुन्दर व दार्शनिक ढ़ंग से किया है ।

मैं इसके लिए बधाई देता हूँ कि ''बेचैन' जी को मेरा आशीर्वाद है कि इसी प्रकार साहित्य को समृद्ध बनाते रहें।

– महा कवि अबधेश
४२५, श्रमणा सदन
नई बस्ती, झाँसी
बुन्देलखण्ड
मो. ९४५१९३७१७०

मुद्रक की कलम से-

आज की विषम परिस्थिति में समय, काम, एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों से समय निकालकर साहित्य की सेवा करना कठिन दुर्लभ कार्य है ऐसे में सेवानिवृत्त डॉ. डी.आर वर्मा 'बेचैन' जी अपने उम्र को पार करते हुऐ साहित्य की सेवा प्रदान कर रहे हैं। हम उनके स्वस्थ की जीवन की कामना करते हैं।

'मधुप्याली' पुस्तक आपके हाथों में है। ३८४ चौकड़ियाँ ८ खण्डों में विभक्त किया है। मंगला चरण से लेकर विभन्न खण्डों में सामायिक विषयों एवं वर्तमान में राजनीतिक सामाजिक आर्थिक एवं अन्य विषयों पर अनूठी प्रस्तुति की है। मधु का रसास्वदन यदि नहीं कर पाता तो यह कृति पढ़कर उसके सम्पूर्ण आनन्द को जीवन में प्रस्तुत कर सकता है।

कीर्तिशेष हरिवंश राय ''बच्चन'' जी की मधुशाला कई बार सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके विचार से मधु के विभिन्न प्रस्तुति में जीवन शैली की क्या विशेषता है। यह अनुभव किया। आज टंकण करते हुए ''मधुप्याली'' भी यह आभाष होता है कि विभिन्न बिषयों पर काव्य में मधु के साथ जोडना कितना कठिन कार्य आपने सूक्ष्मता से प्रस्तुत कर दिया। डॉ.'बेचैन' जी ने मधु जीवन के रास्तविक आनन्द की प्राप्ति करना 'मधुप्याली' आपके हाथ में देकर अध्यात्मिक चित्रण कर दिखाया है जो सराहनीय है, वास्तव में यह कृति समाज में समालोचना के साथ समाज में व्याप्त कुरुति को सही दिशा दे, भगवान से यही प्रार्थना है। धन्यवाद !

-लक्ष्मीकान्त गुप्ता

प्रो. जयभारत प्रेस

मऊरानीपुर

प्रस्तावना

आज के सामाजिक परिवेश में प्रत्येक क्षेत्र में पर्याप्त परिवर्तन दृष्टि गोचर होता है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत् नियम है। प्रतिक्षण समस्त ब्रह्माण्ड गतिमान होने के साथ-साथ परिवर्तनशील है। प्रातः जो कोमल किसलय लाल-लाल जो मन को भाते हैं। दोपहरी वे हरे हो मोहक लगते हैं, तथा संध्या के समय पीताभ होकर धराशायी हो जाते हैं। इस आपाधापी के जीवन में जन आनन्द की खोज में प्रातः से सायं तक खून पसीना एक कर रहा है। कहते हैं कि लौकिक जीवन में कष्ट निवारण हेतु ''मधुप्याली'' को अपने मधुमय होठों से जन लगा लेता है। वास्तव में यथार्थ आनन्द जिसकी वह खोज कर रहा है, इस विश्व बल्लरी में मृग तृष्णा ही है। अलौकिक आनन्द की प्राप्ति ही मधुप्याली (आनन्द) प्राप्त करना है। लौकिकता से अलौकिकता की ओर माया जन्य कष्टों से अध्यात्म जगत् की ओर जाना, ''मधुप्याली'' का संदेश है। इस लोक की ''मधुप्याली'' दुःखदायी व अलौकिक ''मधुप्याली'' मोक्ष प्रदायिनी है जो इस लघु खण्ड काव्य का उद्देश्य है। आशा व विश्वास के साथ ''मधुप्याली'' आपको दे रहा हूं पियें और यथार्थ आनन्द की प्राप्ति करें।

विनयावत् रचियता-

डॉ. डी. आर वर्मा पी-एच.डी.,
पूर्व प्राचार्य, अखण्डानंद जनता इंटर कालेज, गरौठा
निवासी स्यावरी मो. 9794419115

डॉ. दयाराम वर्मा परिचय

नाम- डॉ. दयाराम वर्मा 'वैचेन'

पूर्व प्राचार्य अखण्डानंद इं.कॉलेज,

गरौठा (झाँसी) उ. प्र.

अध्यक्ष- -श्री धन्वन्तरि वैद्य सेवा सोसायटी, स्यावरी (पृथ्वीपुर)

तहसील मऊरानीपुर जिला-झाँसी उ० प्र०

- ईसुरी साहित्य शोध संस्थान, मेंढ़की

तहसील मऊरानीपुर जिला-झाँसी उ० प्र०

संस्थापक/संचालक/अध्यक्ष-

राष्ट्रीय बुन्देली विकास परिषद्, स्यावरी (झाँसी)

स्थापना वर्ष १९८६ ई०

अध्यक्ष- अ०भा० बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद्

शाखा-स्यावरी, प्रधान कार्यालय-भोपाल (म०प्र०)

आकाशवाणी-दिल्ली, सागर, झाँसी, छतरपुर,

कवि/वार्ताकार/कहानीकार/व रेडियो रूपक लेखक

शिक्षा- एम.ए., पी-एच.डी., साहित्य रत्न (संस्कृत), आयुर्वेदरत्न

आयुर्वेद शिरोमणि (मानद)

आयुर्वेद वृहस्पति (मानद)

रजि० चिकित्सक

''बुन्देली सम्राट''

अनुक्रमणिका

विषय-	पेज
वारूणि वंदना (मंगलाचरण)	१३
प्रशस्ति खण्ड	१४
विश्व रचैता खण्ड	२७
राज्य खण्ड	३२
समाज सेबक खण्ड	३५
नेता खण्ड	३८
निरंकुश खण्ड	४७
अभिशाप खण्ड	५०
लेखनी खण्ड	६८
सार खण्ड	७२

---ooo---

डॉ. दयाराम वर्मा

द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ पुस्तिकायें

बुन्देली बताशा

मस्ताना ख्याल

फाग रस खान खण्ड

गारी मनभावन

घरेलू चिकित्सा दोहावली

वर्मा इंग्लिश गाइड

दान लीला व गौरी चालीसा

बुन्देली चौकड़िया सागर

मधु प्याली (खड़ी बोली खण्ड काव्य)

झाँसी जनपद के अज्ञात लोककवि बुन्देली शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित

बंग– विजय (अप्रकाशितै)

'नई टकसार' पूज्य पिता जी स्व.श्री रामसहांय कारीगर आशु कवि की पाण्डुलिपि को पुस्तकाकार करके संपादन व प्रकाशन

एवं अन्य अप्रकाशित साहित्य

पता-

नाम–डॉ. दयाराम वर्मा 'वैचेन'

पूर्व प्राचार्य अखण्डानंद इं.कॉलेज,

निवास– ग्राम पोस्ट– स्यावरी (पृथ्वीपुर)

तहसील मऊरानीपुर जिला–झाँसी उ० प्र०

मोबाइल नं०– 9794419115

वारुणि वंदना
मंगला-चरण

आर्या हे रत्नाकर तनया !-
तुम हो अतिशय प्रिय गुण वाली।
बंदन है, नमन तुम्हें कोटिक,
बंदन सुंदर हे मधु प्याली।।1

बंदनगुरुवर अविनाशीका,
बंदन है वीणा वाली का।
दो ज्ञान सुयश कुछ लिखूं आज,
कोटिक की प्रिय मधु प्याली का।।2

बंदन खल दल को प्रथम करूं,
फिर सुरों को बंदन दे ताली।
बसुधा पर हुई सुधा सम जो,
यह प्राणों से प्रिय मधु प्याली।3

मंथन रत्नाकर का कीन्हा,
तब मधु का सुन्दर रत्न मिला।
यह विष्णु प्रिया की अनुजा है,
अवनी पर नव सम्मान मिला।।4

है अमिय तुम्हारा तात किन्तु,
मद मस्त बनाने वाली तुम।
हे दैत्य प्रिये तुम बंदनीय,
दुख शोक मिटाने वाली तुम।।5

हे शक्ति पुंज! तुम अर्चनीय,
गति परम हंस करने वाली।
महिमा कुछ तेरी लिखूं आज,
वर दो, वर दो हे मधु प्याली।।6

प्रशस्ति खंड

मोहक इस स्वर्णिम भूतल पर,
यह सुधा-वारुणी बन आई।
मनु के इन चारों वर्णों में,
मोहिनी किसे यह नहिं भाई।।7

काल कूट की भगिनी ने,
मोहे सुर, नर, मुनि सब प्रानी।
हो अतुल सुंदरी सुर पुर की,
वह भी वारुणि से कम मानी।।8

सर्वत्र सुवासित डोले यह,
है कहां नहीं इसकी लाली।
कुटिया से महलों तक बैठी,
षोडसी योवना मधु प्याली।।9

नित प्रति प्राची से दिनकर वह,
वारुणि की वर्षा करता है।
मुग्धा ऊषा को पिला पिला,
पीकर वह अरुण निकलता है।।10

कोमल किसलय, कलियां पीतीं
हर डाली पी मनु झूम रहीं।
जलदों ने जी भर के पीली,
बदली भी पीकर घूम रहीं।।11

मखमली दूब पर ओस नहीं,
है छिड़की ज्यों हो मधु हाली।
मार्तंड ने बढ़के पी लीनी,
भू साकी से ले मधु प्याली।12

संध्या की परी न कम मानो,
नित अरुण सुरा वह पीती है।
निशि भर खेले ससि तारों संग,
मस्ती में वह भी जीती है।13

तारागण लुका छिपी खेलें,
पीकर वह रैन बिताते हैं।
सुधा छोड़ नित सुरा पियें,
वे निशि पति चमक दिखाते हैं।14

हंसता रजनीभर विधु देखो,
ले ली जनु उसने मद वाली।
वह खड़ा लुटाता रजत नित्य,
लेता रहता है मधु प्याली।15

देखो इन सुंदर सुमनों में,
मकरंद नहीं है अलियों को।
फूलों से षट्पद मधु लेकर,
मृदुगान सुनाते कलियों को।16

नदियों, तालाबों, झीलों में,
नहिं नीर, वारुणी है सुंदर।
मानो रत्नाकर में अब भी,
वह सुरा विराजी है अंदर।17

वन में, नग, बाग, मरुस्थल में,
सर्वत्र है मदिरा की लाली।
यह विश्व मोहनी अतिशय प्रिय,
दिल दिल में बसती मधु प्याली।18

मधुमय सब मेरा ग्राम बने,
मधुमय निज राज्य वा राष्ट्र बने।
मधुमय सारा संसार बने,
नहिं कहीं कोई धृतराष्ट्र बने।19

चौराहों गलियों गलियों में,
देखो घर घर मधु घुस आई।
नर मूढ़ से बड़े मनीषी तक,
रूपसि मधु सबके मन भाई।20

असुरों ने सुरा लपक लीनी,
उनके मुख पर छाई लाली।
मद मस्त हुये झूमे सारे,
मुंह सदा लगायें मधु प्याली।21

कण कण मधु मस्ती से हंसता,
डाली डाली है झूम रही।
इस हवा को हवा लगी ऐसी,
वह भी मधु पीकर घूम रही।22

मधु महाशक्ति मय रत्न बनी,
असुरों को प्राणों से प्यारी।
मन करो मस्त तुम अमर रहो,
सबको अतिप्रिय हो मतवारी।23

मधुमास सुहाना लगता क्यों,
मधु लिये महकती हर डाली।
देखो मधूक–पादप बांटे,
पीलो भावे जो मधु प्याली।24

स्वर्गाधिपति बने हैं खल दल भी,
यह भी तो मधु की महिमा है।
दुःख नाशिनी देवी यह है,
यह ही अणिमादिक गरिमा है।25

समदरसी गति हो परम हंस,
बसुधैव कुटम्ब का ज्ञान मिला।
हे वारुणि! तुम हो वंदनीय,
तुमसे सुख स्वर्ग समान मिला।26

तुम बनो सहचरी जिसकी वह,
अवनी पर हो अति बलशाली।
सम्राट बना देती पल में,
कर में बस हो वह मधु प्याली।27

तुम ह्रदय-कमल जा बसती हो,
स्वर्गिक सुख देतीं अवनी पर।
रोते को आन हंसा देती,
अमृत वर्षातीं अवनी पर।28

सोना, चांदी, हीरा मोती,
अरुधरा, धाम, धन फीके सब।
वारुणि के आगे नत मस्तक,
प्याली के सम्मुख फीके सब।29

चह अग्रिम पंक्ति तुम्हारी है,
सब कहें बजाकर के ताली।
तुमसा पृथ्वी पर नहीं कोई,
है धन्य निराली मधु प्याली।30

अतिशय प्रिय हिये निवासिन तुम,
चाहें जो उनके संग रहो।
परिचारक, साहब को प्रिय हो,
तुम अमिय बनी वारुणी अहो।31

उत्सव में लगते चार चांद,
पद–कंज तुम्हारे पड़ते हैं।
उल्लास नया तब आ जाता,
तुमको पाकर सब बढ़ते हैं।32

यदि नहीं मिली महमानों को,
फीकी छप्पन भोजन थाली।
पक्की पक्का आनंद करे,
यह रही छलकती मधु प्याली।33

काजू किशमिस मेवा क्या है,
अंगूर, संतरे, सेव कहां ?
रबड़ी, मलाई मिष्ठान सभी,
वारुणि के आगे टिके कहां ?34

पूड़ी हलुवा सब्जी सारी,
घी दूध की गणना कहीं नहीं।
इस रत्न वारुणी को जग में,
पा सके पदारथ कोई नहीं।35

वाइन से रिश्ता जुड़ जाये,
फिर टूटे नहिं जिसने पाली।
दुनियां सारी यह छूट जाय,
पर छूटे नहिं यह मधु प्याली।36

इस मदिरा का जो आनंद है,
पाने को देव तरसते हैं।
पीने वालों से पूछो तो,
क्या क्या रस रंग बरसते हैं।37

जिसने है हृदयासीन किया,
वह संग न फिर तज सकती है।
मित्र बनाती वह ऐसा,
वह मुक्ति धाम पर तजती है।38

भैया छूटे मैया छूटे,
घरवाली छूटे या साली।
जगती धन दौलत छूट जाये,
पर रहे हाथ यह मधु प्याली।39

तन में मन में कोई पीड़ा हो,
वारुणि ले ले छूमंतर हो।
समदरसी होता है पल में,
अंतर में कोई न अंतर हो।40

राजा होवे या रंक कोई,
सबने सदियों से अपनाया।
कितना भी दुष्कर कार्य कहीं,
वारुणि ने छण में करवाया।41

है यथार्थ में देवी यह,
सारे आनंद देने वाली।
यह सुरा नहीं है सुधा है सच,
पीलो पीलो लो मधु प्याली।42

यदि दुगुर्ण मधु में होता तो,
रत्नों में गणना क्यों होती।
यह सुधा, लक्ष्मी की भगिनी,
फिर बंदनीय भी क्यों होती।43

जगह जगह सरकारों ने,
वारुणि विभाग भी खोले हैं।
अरबों की आय देश को है,
यह चम्म बनाती चोले हैं।44

आदर के सहित दुकानों में,
आसन मधु को मिलती हाली।
सिर धर के नमन सभी करते,
यह अतुलनीय है मधु प्याली।45

कच्ची, पक्की, ठर्रा, ह्विस्की,
रम, वाइन बहिन तुम्हारी हैं।
महुओं की अंगूरों की जौ की,
गुड़ की भी बनती न्यारी है।46

सहसों को रोजगार देती,
परिवार हजारों मस्त रहें।
महिमा मय मदिरा सभी कहें,
कोई नहिं तुमसे त्रस्त रहें।47

भैंरव देव, घाट देवा अरु,
पीती है देवी काली।
इनकी पूजा में लगे सदा,
कर गौर लखो यह मधु प्याली।48

वारुणि विन शतशत औषधियां,
कई योग क्वांरे रह जाते।
तुम स्वास्थ्य प्रदात्री हो देवी,
जन अमित स्वास्थ्य तुमसे पाते।49

हर वस्तु नशीली धरती पर,
क्यों वारुणि से परहेज करें।
मद भरे नयन भी हीते हैं,
दिल में क्यों उन्हें सहेज धरें।50

रोटी में नशा है भोजन में,
क्यों भाती फिर सबको थाली।
फिर निंदनीय क्यों बतलादो,
यह एक विचारी मधु प्याली।51

संतरी से मंत्री तक मदिरा,
है कौन जिसे नहिं यह भाई।
सब चाहें दिल से देख लिया,
प्यारी सबकी यह बन आई।52

चोट लगी कैसी कोई,
नग नग हड्डी में दर्द हुआ।
बाहर लगाई अंदर ले ली,
प्रमुदित वह देखा मर्द हुआ।53

ठंडी जब हाड़ कंपाती है,
वह दूर भागती मतवाली।
सहसों को लेते देखा है,
नहिं शीत लगा ली मधु प्याली।54

यह दवा नहीं नहिं परामर्श,
उपचार नहीं बस चर्चा है।
जिस भाव से जो ले मधु प्याली,
उसको वैसा ही दर्जा है।55

मधु की महिमा है नेतिनेति,
शास्त्रों में अंकित लेख पड़े।
कवि कौन जो वर्णन कर पावे,
मधु रत्न से हारे बड़े बड़े।56

मधुशाला में जाकर सुन लो,
प्रवचन करते जिसने पा ली।
यह निंदनीय नहिं, बंदनीय,
सब सुक्ख प्रदात्री मधु प्याली।57

स्वर्गिक सब सुख हैं वारुणि में,
हैं इसमें सब पुरुषार्थ बसें।
जन पीते और पिलाते हैं,
देखो सुख शोभा खूब लसें।58

सोना, चांदी, हीरा, मोती,
इनमें है नशा अपार बसा।
बिन खाये नशा चढ़ जाता है,
बस आये पास बढ़ जाये नशा।59

देखो रंगीन सुरा कितनी,
यह श्री विष्णु जी की साली।
ले लो ले लो सुख पालो सब,
कितनी सुंदर है मधु प्याली।60

तन के अंदर जब रत्न गया,
जन हरिश्चन्द्र का बाप बने।
सब कुछ कह देता सत्य सत्य,
पुरव के पुण्य अरु पाप घने।61

छल, झूठ, कपट सब निकल भगें,
देवी मदिरा अंदर आईं।
आत्मा, मन, बुद्धि शुद्ध करती,
वारुणि है जिसके मन भाई।62

यह अमित गुणों की खान बनी,
स्वर्गिक वसुधा रचने वाली।
अवनी का अमृत है प्यारी,
हँस महक दे रही मधु प्याली।63

जो लेय सदा पृथ्वी जीते,
फिर अमर लोक जय करता है।
बिजयी बन दशों दिशान बढ़े,
दिग्विजय को आगे बढ़ता है।64

जो करे तपस्या वर पावे,
जो मन चाहे मिल जाता है।
उद्धरण हजारों भरे पड़े,
जग भर फिर शीस झुकाता है।65

पशु पक्षी नर से श्रेष्ठ अहो,
खाते सुवस्तु खाने वाली।
नर भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाता,
असुरों की पीता मधु प्याली।66

यह नैना बड़े पियक्कड़ हैं,
जो रूप बरंडी पीते हैं।
सुर, नर, मुनि पीकर मस्त हुये,
उद्धरण जागते जीते हैं।67

सौन्दर्य सुरा से सहस्त्र गुना,
दर्शन दे नशा चढ़ाता है।
क्यों पीते हैं पीने वाले,
कुछ नहीं समझ में आता है।68

जो नशा देखते ही करदे,
वह गोल कपोलों की लाली।
कह दो सौन्दर्य नशीला है,
या होय नशीली मधु प्याली। 69

कब कहा कहां मदिरा ने यह,
आओ मुझको लो पाप करो।
जो बोता जन जैसा जग में,
वह काटे वैसा ध्यान धरो। 70

जड़ हो पदार्थ या चेतन में,
गुण अवगुण मय सब रचे हुये।
गुण अवगुण चाहो जो ले लो,
पृथ्वी पर अगणित बचे हुये। 71

नर नीर छीर के ज्ञान हेतु,
नहिं हंस बने, मति कर काली।
पीकर के मरे मारता है,
बदनाम कराता मधु प्याली। 72

हो कामिन कनक लता सी अरु,
नैना हो खंजन मद वाले।
हो लंक सिंहनी सी कोई,
कच लम्बे काले घुंघराले। 73

तिल चिबुक लसत वह काला हो,
औठों पर कुदरत की लाली।
मृगनयनी काम कलश दो दो,
उतुंग वक्ष शोभा शाली। 74

नासिका लजाये मैना को,
वाणी पिक शरमाने वाली।
राका निशि नीरव हो सुंदर,
साकी ले आये मधु प्याली। 75

विधु बदनी अस एकान्त मिले,
अगड़ाई भी वह लेती हो।
हाव भाव श्रृंगार भरा,
भंवरी सी फिरकी देती हो। 76

गल बहियां दे वह डाल वहां,
मुस्कान बान फिर छोड़ चले।
बोलो नहिं नशा चढ़े किसको,
फिर मार पंच शर छोड़ चले। 77

बिन पिये होहिं बेसुध प्रेमी,
वह शोभा मद करने वाली।
सौन्दर्य नशीला होता बहु,
फिर निंदनीय क्यों मधु प्याली। 78

ऊंचा पद पाकर के जन मन,
मद मस्त नशा में होता है।
तन सबल पुष्ट हो देह बड़ी,
वह भी बल नशा संजोता है। 79

तपसी ने तप का नशा पिया,
ज्ञानी ना ज्ञान संभाल सका।
धीर, वीर, ज्ञानी रावण,
मानवता नहिं वह ढाल सका। 80

दश कंध अंध-मद चूर हुआ,
ली चुरा पराई घर वाली।
यह विश्व भरा मद से मानो,
क्यों बुरी कहें फिर मधु प्याली। 81

यदि जनहित के लिए कहीं,
वारुणि क्या विष भी पीना हो।
पी नीलकंठ बन जाओगे,
फिर सफल व्यक्ति का जीना हो। 82

महा तपस्वी दैत्य हुए,
जिनको मदिरा दी मतवाली।
कर कदाचार अघ-मस्त रहो,
कब कहती बोलो मधु प्याली। 83

सौहार्द बनाती प्रेम भाव,
जन मन को सुख देने वाली।
जन कर्म स्वयं खोटे करता,
आरोपित होती मधु प्याली। 84

विश्व रचैता खंड

यदि विश्व रचयिता होता मैं,
तो मेरे न्यारे ढंग होते।
बाला न वियोगिन होतीं इक,
चकवी चकवा वे संग सोते। 85

सोलह श्रृंगार किये रहती,
अभि सारिका सभी बनीं रहतीं।
मानिनी मचलती मुग्धा सी,
सिंदूर से सभी सनी रहतीं। 86

हर पीने वाले को मिलती,
वारुणि निकली ताजी हाली।
ओठों पर जाम छलकते नित,
दिन रैन खनकती मधु प्याली। 87

मेघों से कहता जाओ अभी,
रत्ना कर से मधु भर लाओ।
वारुणि की ही वर्षा कर कर,
तालाब, झील सब भर आओ। 88

वापी, सर, कूपों, नदियों में,
नालों में वारुणि ही बहती।
सर्वत्र महक मदिरा देती,
घट घट में भरी सदा रहती। 89

पानी का होता नाम नहीं,
रहती सबके मुख पर लाली।
रक्खे रहते निज पास सभी,
जी भरके पीते मधु प्याली। 90

यज्ञ, दान, तप जन करते,
बहु पुण्य नीर हित यदि करते।
उन लोगों को जल मिलता थोड़ा,
जल वर्षा मेघ वहां करते। 91

जल पीने की सुधि होती नहिं,
सब वारुणि पीते सुख कारी।
पीड़ा का नाम नहीं होता,
मृदु बचन बोलते नर नारी। 92

चोरी सपने में नहिं होती,
सबकी नित रहती दीवाली।
ममता समता मय होते सब,
सर्वत्र महकती मधु प्याली। 93

हिंसा का नाम नहीं होता,
ताले भी घर में नहिं लगते।
अपराध नहीं करता कोई,
सब प्रेम-चाशनी से पगते। 94

पीते वारुणि नर नारी सब,
पर धनी चरित्रों के होते।
जननी सी जानते पर नारी,
सद्भाव बीज जन जन बोते। 95

अस्त्र, शस्त्र, आयुध कोई,
दिखते न कहीं रावण, बाली।
मेरी रचना में शांति शांति,
रहती संग लेकर मधु प्याली। 96

दिन में उलूक देखा करते,
वे भी निशि में सोते दम से।
मृदु बोल बोलते वे भी सब,
आदर पाते तुमसे हम से। 97

पर धन सोना, चांदी, हीरा,
जन सभी मानते मिट्टी है।
औरों के हीरे को भी जन,
मन मान मानते गिट्टी है। 98

मदिरा पीकर के सृष्टी में,
नहिं कोई सुनाता इक गाली।
पीने की छूट सदा रहती,
सब भरी दिखाती मधु प्याली। 99

पशु पीते पंछी भी पीते,
बरबस पीते सब नर नारी।
मेरी दुनियां मधुमय होती,
मधु महक छोड़ती फुलवारी। 100

वारुणि से सींची जाती नित,
सुरभित फूलों की हर क्यारी।
मल्लिका मोंगरा महकाते,
मदभरी पवन मस्ती वारी। 101

पिक वन्धु न केवल ऋतु पति में,
वह पवन बहाते मद वाली।
षट् ऋतु में बात वही बहती,
महके ज्यों मन हर मधु प्याली। 102

बनते न कुभाव स्वभावों में,
चित्त वृत्ति में सद्गुण ही पलते।
नर मानवता मय देव तुल्य,
सब होते दुर्गुण सब जलते। 103

लोभ, वितृष्णा ईर्ष्या का,
अरु क्रोध दंभ का नाम नहीं।
मैं ये दुर्गुण देता न कहीं,
त्रय ताप का होता नाम नहीं। 104

मैं कंटक नहिं पैदा करता,
षट् ऋतु में छाती हरयाली।
मधुमय समाज सब भूतल पर,
हो यही बताती मधु प्याली। 105

मैत्री होती भूखंडों में,
सम्मान परस्पर भाव लिये।
साम्राज्य शांति का होता सब,
रहते जन मृदुल स्वभाव लिये। 106

बिजलियां गिराते मेघ नहीं,
मृदु मंद मंद गर्जन करते।
अम्बर बितान ताने रहता,
वे दिनकर सुख किरणें भरते। 107

मैं सारी बसुधा सुखी बना,
जन जन को देता खुशहाली।
मधु का आनन्द सभी पाते,
पीते सब जन यह मधु प्याली। 108

होती अतिवृष्टि नहीं भू पर,
नहिं अनावृष्टि अवसर देता।
जितनी आवश्यक जहां वहां,
मधु मेघ वहां वर्षा देता। 109

होते नहिं बृश्चिक ख्याल कहीं,
अमृत मय सारा जग होता।
सब पदार्थ मधुमय होते,
जीवों में ममता धन होता। 110

मेरी रचना में सिंह हिरन,
रहते ज्यों ग्वाला वनमाली।
लवा बाज में बैर नहीं,
लख प्रेम बिहंसती मधु प्याली। 111

विविध रंग के खिलें नित्य,
सुमनों से धरा भरी होती।
सुरपुर उतार देता भू पर,
हर बाला सती परी होती। 112

पाप, त्रास, कटु भाव सभी,
रोते फिरते मारे मारे।
सब सुख मय सब जीवन जीते,
आदर्श सुजन होते सारे। 113

सद्कर्मों के फल सुधातुल्य,
मधुमय लगते डाली डाली।
फिर होती किसकी हानि कहो,
सब लेते रहते मधु प्याली। 114

राज्य खंड

यदि मैं राजा होता तो फिर,
आदर्श व्यवस्था कर देता।
अपने ही राज्य में पीने पर,
पूरा प्रतिबंध लगा देता। 115

मेरे नव रत्न वही होते,
जिनको वारुणि विष सी लगती।
अनुशासन प्रिय आज्ञा कारी,
होते विकास में बुद्धि लगती। 116

क्षेत्र प्रक्षेत्रों में होते बहु,,
दारू के नियंत्रक बलशाली।
सपने में नहीं किसी को भी,
वह नहीं दिखाती मधु प्याली। 117

यदि कहीं कोई पकड़ा जाता,
जिसने मदिरा का जाम पिया।
सौ कोड़े तुरंत लगते उसको,
उसने अक्षम्य अपराध किया। 118

दोबारा यदि फिर पीता वह,
छै माह जेल में श्रम करता।
जिसके घर में मदिरा मिलती,
दस वर्ष जेल में दिन भरता। 119

करते तस्करी पकड़ जाता,
पेटी मिलती मदिरा वाली।
आजन्म कैद में रहता वह,
सपने में दिखाती मधु प्याली। 120

यदि कहीं कारखाना मिलता,
दारू बनती पकड़ी जाती।
जनता के सम्मुख उसकी तो,
फांसी तुरंत ही लग जाती। 121

दारू के नाम से सपने भी,
मेरे सुराज में आते नहिं।
जिनको प्रिय मदिरा होती वह,
राज्य में तो रह पाते नहिं। 122

अधिकार किसी को नहिं देता,
बेचे बनाय मदिरा लाली।
नहिं मधु मिलती नहिं पीता कोई,
नहिं कहीं दिखाती मधु प्याली। 123

शासन सत्ता अच्छी है वह,
जो लोक का बहु कल्याण करे।
कोई ना दुखी राज्य में हो,
जन जन सम्पूर्ण विकास करे। 124

कहीं कोई हिंसा नहिं हो,
सब जन तो शांति उपासक हों।
सबमें हो प्रेम ममता प्यारी,
आदर्श वहां के शासक हों। 125

मैं स्वयं निरीक्षण करता नित,
मंत्री होते गौरव शाली।
वे अलग गुप्तचर रहते जो,
नित खोज के लाते मधु प्याली। 126

मिल जाती कहीं किसी के घर,
खोजे जाने पर यदि दारू।
देश निकाला दे देता,
वह राज्य को हो जाता भारू। 127

राज्य की सेना जो रहती,
कप्तान व सेना पति न्यारे।
उत्तम वारुणि उनको मिलती,
वे होते प्राणों से प्यारे। 128

प्राण हथेली रखे वीर,
रहते तत्पर अति बल शाली।
ओज, कांति, पौरुष के हित,
उनको मिलती बस मधु प्याली। 129

चरस, भांग, गांजा, अफीम,
जितने भी मादक द्रव्य कहें।
सब पर प्रतिबन्ध लगाता मैं,
जन जन सब इनसे दूर रहें। 130

तम्बाकू बीड़ी धूम्र पान,
केंसर इनसे हो सकता है।
राज्य मेरे में जो रहता,
नहिं नशा कोई कर सकता है। 131

क्रय विक्रय इनका नहिं होता,
जनता में छाती खुशहाली।
सब सुखी रहो सानंद रहो,
कहती सुदूर से मधु प्याली। 132

समाज सेवक खंड

नेता समाज सेवक होता,
जन सेवा प्रभु की सेवा है।
जनता तो यही जनार्दन है,
जनता यथार्थ में देवा है। 133

यदि प्रभु सेवा नहिं कर पायी,
तो अपराध नहीं कुछ है इसमें।
जनता की सेवा करो नित्य,
है प्रभु की भक्ति बड़ी इसमें। 134

मेरे बनाये सब जीवों की,
सेवा कर मम सेवा पाली।
इसलिये श्रेष्ठ जन सेवा तो,
क्या जनता को दूं मधु प्याली। 135

मैं समाज का सेवक बन,
सबमें प्रभु के दर्शन करता।
समदरसी होती दृष्टि मेरी,
तन मन धन सब अपर्ण करता। 136

असहायों की करता सहाय,
दुखियों का दर्द बंटाता मैं।
दीनों हीनों का सेवक बन,
जीवन को धन्य बनाता मैं। 137

इस भू पर मानव धर्म बड़ा,
ऐसी सुबुद्धि जिसने पाली।
विष है वारुणि मैं कहता यह,
मत लेना कोई मधु प्याली। 138

क्षमा, दया, ममता, करुणा,
यदि मुझमें सद्गुण आ जाते।
कामादि दंभ ईर्ष्या तृष्णा,
सब एक एक कर भग जाते। 139

मैं समाज सेवक होकर,
निःस्वार्थ जो सेवा कर पाता।
तो यथार्थ में ईश्वर से,
मेरा नाता दृढ़ जुड़ जाता। 140

जितनी जैसी जिस माध्यम से,
सेवा की बृत्ति बना डाली।
समझो बस उससे दूर हुई,
मद भरी छलकती मधु प्याली। 141

पद लोलुप बन जन सेवा में,
जो लगा रहे वह स्वार्थ सना।
जीवन का लक्ष्य नजाना कुछ,
नहिं तन से कुछ परमार्थ बना। 142

गांधी, जे.पी. ने सेवा की,
पद को पग से है ठुकराया।
शतशत जन ऐसे बंदनीय।
जन सेवा कृत्य जिन्हें भाया। 143

जितनी कर पाता करता मैं,
करता न कार्य कोई जाली।
मुझसे अरु मेरी जनता से,
वह दूर दिखाती मधु प्याली। 144

वह शक्ति हमें दो अविनाशी,
दिन रैन करूं जन की सेवा।
जन सेवा में हीं छिपा मोक्ष,
सेवा से मिलते सब मेवा। 145

उपदेश नहीं प्रबचन नहिं है,
है तथ्य सत्य नर जीवन का।
प्राणी की सेवा सदा करे,
यह कर्म है मूर संजीवन का। 146

अपना नहिं कोई शत्रु यहां,
बोलो फिर किसको दें गाली।
सबमें उसकी ही दिखे झलक,
किसको फिर दूं वह मधु प्याली। 147

हूं दूर बहुत निज मंजिल से,
चल रहा अवश्य मैं पा लूंगा।
जितनी जन सेवा हो मुझसे,
उतनी ही कर से कर लूंगा। 148

जन सेवा है आसान नहीं,
यह भारी कठिन साधना है।
साधक यदि मैं बन पाता तो,
हो जाती सफल कामना है। 149

मैं जन सेवक बनना चाहूं,
पर करतूतें सब हैं काली।
क्यों जन सेबक का स्वांग करूं,
है भरी रखी यह मधु प्याली। 150

नेता खंड

यदि नेता होता जनता का,
मैं धन्य भाग्य अपने कहता।
खादी तन पर शोभा देतीं,
मेरा नक्शा अनुपम रहता। 151

दो की चार, चार की चौदह,
बातें मैं बनाता सुखकारी।
द्वारे पर भीड़ लगी रहती,
जनता भोली दुनियां दारी। 152

स्टील के चमचे भी होते,
लाते असली महुओं वाली।
दम से दिन रैन छलकती वह,
फिर नहीं ललकती मधु प्याली। 153

भाषण का कोर्स कर पूरा मैं,
ओजस्वी वक्ता बन जाता।
जाता जुलूस सम्मेलन में,
पेपर में नाम भी छप आता। 154

मिर्च मसाला मिला मिला,
भाषण स्वादिष्ट बना देता।
बादों झांसों का तड़का दे,
खुशबू मीलों महका देता। 155

मेरे प्रोग्राम लगे रहते,
लिपटे रहते साले साली।
मौसम रंगीन बना देती,
वह भी हंस जाती मधु प्याली। 156

दिन रात चप्पलें घिसघिस कर,
चर्चित समाज में हो जाता।
अधिकारी संतरी मंत्री से,
मेरा दृढ़ नाता जुड़ जाता। 157

झूंठ की टॉनिक पिला पिला,
लट्टू जनता को कर देता।
आश्वासन का अवलेह खिला,
जनता को स्वस्थ्य बना देता। 158

मैं डामर सड़क डला दूंगा,
द्वारों पर बनवा दूं नाली।
जन पीते और पिलाते नित,
मद भरी दिखाती मधु प्याली। 159

सम्मान मान घर पर रख कर,
ब्रत नेता गिरी का मैं लेता।
पिटता होती नहिं बात बड़ी,
कइ इक मैं भी पिटवा देता। 160

नेता की यह तो ट्रेनिंग है,
पिटने से मान नहीं जाता।
अग्नि में जो तपता नहि तो
सोना कुंदन नहिं बन पाता। 161

ज्यों कुम्हार ने पीट पीट,
गागर वह सुंदर गढ़ डाली।
त्यों कुट पिटकर नेता बनता,
बस छोड़ी नहिं कोई मधु प्याली। 162

बिन पैंदी के लोटा ज्यों हो,
मैं ढ़ड़क किसी में मिल जाता।
फस जाती अंधे को बटेर,
मंत्री पद भी यदि मिल जाता। 163

पलटू, ढड़कोले कहे कोई,
क्या इससे इज्जत है जाती।
वह तो पहले घर रख आया,
सरकार में मेरी धुक जाती। 164

झगड़ा दंगे करवा देता,
मिलती विपक्ष को बहु गाली।
मैं कई घुटाले कर लेता,
चलती रहती नित मधु प्याली। 165

कृष्ण जनम घर जाने की,
तो बात बाद में ही आती।
जब जांच सि.बी.आई. करती,
यदि जांच में गर्दन फंस जाती। 166

बड़े बड़े लीडर भी अब,
घर कारागार समझते हैं।
वर्षों से अंदर जेल पड़े,
नहिं आंखे नीची करते हैं। 167

कोटिक तो कमा धरे गृह में,
प्रमुदित पीढ़ी आगे वाली।
लूटता मैं छमता भर दम से,
कर लिये हुये वह मधु प्याली। 168

आय से अधिक केसमें यदि,
मेरा भी नम्बर लग जाता।
वर्षों मुकद्दमा चलता फिर,
सब रफै दफै वह हो जाता। 169

देश हमारा है भारत,
हम भी भारत है प्यारे।
भारत का धन अपना धन है,
अपना यह सोच सुनो प्यारे। 170

जो होना होता हो जाता,
कब चिंता नेतों ने पाली।
अपना बन्ता बस बन जावे,
नित भरी रहे वह मधु प्याली। 171

पहले ठीक चुनावों के बस,
देखता मैं हवा कौन चलती।
दल बदल हवा में उड़ आता,
भाग्य से मेरी तुरप थलती। 172

फायल को दबा दिया जाता,
दम उसकी दबे निकल जाती।
यदि ऐसा नहिं कर पाता तो,
सब नेता गिरी बिगड़ जाती। 173

चलते रहते दम बीस केस,
वह दफा तीन सौ दो हाली।
होती न जमानत नहिं होती,
कर में रहती वह मधु प्याली। 174

षड़यंत्र में मुझे फसाया है,
मैं कहता लड़ता केस सभी।
देता वकील को मेहन्ताना,
पैरवी कराता बड़ी सभी। 175

हो जाता बरी गारंटी से,
बन जाती मेरी धाक नई।
फिर नेता गिरी चमक जाती,
फिर पांच साल को बात गई। 176

नित बंधा कमीशन घर आता,
आती फल फूलों की डाली।
लड़के विदेश पढ़ने जाते,
मैं यहां उठाता मधु प्याली। 177

मेरी जुगाड़ लग जाती तो,
टिकिट मुझे फिर मिल जाता।
कर जोड़ मांगने बोटों को,
जनता के बीच चला जाता। 178

जूता चुनाव चिन्ह मिल जाता,
कहलाता मैं किस्मत वाला।
यदि मंच पर जूता फिक आता,
होता प्रचार मेरा आला। 179

भाषण को लच्छेदार बना,
बजवाता पल पल पर ताली।
कहता अपने प्रिय बोटों से,
दम से पिलाउंगा मधु प्याली। 180

घर घर मदिरा की पेटीं बहु,
चतुराई से पहुंचा देता।
कच्ची पक्की जैसी चाहे,
घर घर क्वाटर रखवा देता। 181

मुर्गों की आफत आ जाती,
गुर्गों को भारी खुश करता।
खाओ पियो दम से प्यारे,
दम से खर्चा नित मैं करता। 182

होटल पर फ्री खाना मिलता,
चमचे सब करते रखवाली।
पीने को रैन दिना मिलती,
प्रिय वोटों को वह मधु प्याली। 183

इतनी रम रोज छलक जाती,
गलियों में कीचड़ मच जाता।
ड्रम के ड्रम रखते छुट भइया,
क्वाटर पाउच को गिन पाता। 184

होती शिकायत यदि थाने में,
पिलवाता जम के डाट बड़ी।
पहले बुक करता कोतवाली,
मिलती विपक्ष को मात बड़ी। 185

होर्डिंग बेनर अरु पंपलेट,
गलियां होती सब मतवाली।
पीने वाला हर वोटर फिर,
छण छण पर लेता मधु प्याली। 186

कहता प्रचार में भाषण में,
हर वार्ड में ठेका खुलवाऊं।
पीने को दम से मिले रोज,
मैं नई व्यवस्था करवाऊं। 187

हर घर का मुखिया जो होगा,
वह फ्री पियेगा पांच वर्ष।
बोलो मेरे इस भाषण से,
होता किसको नहिं नया हर्ष। 188

पैसा दारू के दम पर ही,
रैली बनती शोभा वाली।
पहले से ही छुट भइयों को,
बोतल संग मिलती मधु प्याली। 189

मेरी चुनाव रैली होती,
फिल्मों की हीरोइन आती।
महीनों पहले होता प्रचार,
लाखों की भीड़ वहां आती। 190

सजे मंच पर हीरोइन,
जब लगाके ठुमके इतराती।
गजब अदावाजी करती,
जनता भारी खुश हो जाती। 191

दो सौ से अधिक कुचल जाते,
चालिस की दम होती खाली।
जीत मेरी निश्चित होती,
घर घर पिलवाता मधु प्याली। 192

मेरे ही लिये लगा देते,
निज जान की बाजी अधिकारी।
पुलिस टीम कुछ नहिं करती,
वोटिंग फर्जी होती भारी। 193

हर वूथ कैप्चर करवाता,
अधिकारी लिखता निज मन की।
जीत मेरी घोषित होती,
ऊपर से कुछ लगती तुनकी। 194

माइक अरु जीपें अनगिनती,
करतीं प्रचार दे खुशहाली।
फेवर में हवा बदल जाती,
क्यों नहीं जिताती मधु प्याली। 195

जूता को दिखा दिखा कर मैं,
अपना प्रचार निस दिन करता।
हर नेता मुझसे संबंधित,
जूते की दम पर दम भरता। 196

जूता ही अवध की गद्दी पर,
चौदह वर्षों आसीन रहे।
जूता की महिमा सब जानें,
जूता सबका आबाद रहे। 197

खुलता रिजल्ट मेरे गल में,
मालायें गिरती दे ताली।
धन्य धन्य वोटर देवा।
यह धन्य, धन्य है मधु प्याली। 198

विजयी जलूस मेरे होते,
सौ मन गुलाल भी उड़ जाती।
ड्रम के ड्रम सुरा छलक जाती,
टैंकों प्यालों से पिव जाती। 199

शपथ ग्रहण का समारोह,
सादा होता आदर्श बड़ा।
पार्टी में मेरे समर्थकों में,
दिन दूना होता हर्ष बड़ा। 200

किसी काम से जन कोई,
आता पीड़ित ले घरवाली।
नौकर कहता बाहर बैठो,
है अभी चल रही मधु प्याली। 201

जन साधारण तो बैठे बैठे,
संध्या होती वापिस जाते।
जीत जिन्होंने दिलवाई,
उनसे मिलने भी नहिं आते। 202

बड़ों बड़ों के फोन लगा,
सब काम कराते नेता जी।
जन साधारण को दर्शन तक,
देते नहिं अपने नेता जी। 203

पहले कर जोड़े पांव पड़े,
साष्टांग संग थी घरवाली।
अब समय नहीं है मिलने का,
ऐसी अलवेली मधु प्याली। 204

निरंकुश खंड

यदि राज निरंकुश करता मैं,
मेरी आज्ञा मानी जाती।
इच्छा मेरी आज्ञा होती,
सर्वोपरि वह जानी जाती। 205

तानाशाही चलती मेरी,
क्या अनुचित क्या है उचित कहां।
इसका विवेक नहिं होता फिर,
मेरी चलती सब ओर वहां। 206

मैं स्वयं सुनो इतनी पीता,
बेहोश बनाती मतवाली।
रह पाता वही राज्य में जो,
पीता नितप्रति वह मधु प्याली। 207

सब मस्त प्रजाजन रहते नित,
निज कर्म भी करते मस्ती में।
जो पीकर गाली नहीं बके,
रह पाता न राज्य की बस्ती में। 208

जिसने नहिं मारा मारी की,
नहिं हुई नित्य मूड़ा फोरी।
सौ कोड़े लगा भगा देता,
जनता भी होती नहिं भोरी। 209

दिन रात नशा छाया रहता,
दिखती मुख मण्डल पर लाली।
मैं खुश होता यह देख देख,
जन जन लेता है मधु प्याली। 210

निर्धन जन कोई नहीं होता,
मेहनत दूनी जन जन करते।
आय भी होती दूनी फिर,
वे राज कोष मेरा भरते। 211

घर घर बनती मधुशाला वह,
क्या बाल वृद्ध क्या नर नारी।
सब पीते होकर मुदित बड़े,
प्रजा सुखी रहती सारी। 212

रख जाते रोज सेवकों को,
उत्तम वारुणि निकली हाली।
रहते सब एक देश हित में,
मुंह लगी दिखाती मधु प्याली। 213

अगर देश कोई कुदृष्टि,
प्यारे स्वदेश पर कर देता।
जन जन मर मिटने को तत्पर,
उस शत्रु को सबक सिखा देता। 124

राष्ट्र एकता दृढ़ होती,
थर थर कंपते सब देश अन्य।
घर में लड़ते, भिड़ते, मरते,
फिर भी पी होते वीर धन्य। 215

सेना अति सबल सभी होती,
आज्ञा पर मर मिटने वाली।
होता सशक्त सब देश मेरा,
इसलिये पिलाता मधु प्याली। 216

युद्धाभ्यास कराता नित,
सेना को सबल बनाने को।
लड़ते आपस में युद्ध भांति,
छण भर में शत्रु हराने को। 217

सभी क्षेत्र में श्रम करते,
दूना उत्पादन भर देते।
इसलिये पिलाते नित वारुणि,
दुत गति से उन्नति कर लेते। 218

उन्नति की दौड़ दौड़ते सब,
छाती न कहीं छाया काली।
आगे जग में दिखाई देते,
ले लेकर भी यह मधु प्याली। 219

आपस में पीते लड़ते भी,
पर उन्नति को याद किये रहते।
अवसर पर होते एक नेक,
नहिं किसी शत्रु से भी डरते। 220

एकता अखंडता दृढ़ता हित,
पीने की होती छूट बड़ी।
अपनत्व देश में बना रहे,
मधु बनती इसमें एक कड़ी। 221

अच्छाई जो खोजे बुराई में,
उसकी बल बुद्धि है गुण वाली।
आदर्श नागरिक सब होते,
पीकर के भी वह मधु प्याली। 222

अभिशाप खंड

ऐसा कंचन है निंदनीय,
पहने से जिससे नाक कटे।
लोहा भी वह है बंदनीय,
जिससे दुश्मन की शीश कटे। 223

यद्यपि वारुणि है रत्न एक,
नर ले कुपंथ चलने लगते।
वारुणि कहती कब बुरा करो,
नर पाप में खुद जाकर पगते। 224

मदिरा ही कलंकित होती है,
करतूतें जन करता काली।
नर रत्न बुरा करता कर से,
अभिशापित होती मधु प्याली। 225

पास बांस नहिं होगा तो,
वंशी बाजेगी कभी नहीं।
यदि वारुणि आई पास सुनो,
विष बेल बढ़ेगी पास यहीं। 226

पीने वाला यह सोच रहा,
मैं दारू को नित पीता हूं।
दारू यथार्थ जन को पीती,
वह जाने सुख से जीता हूं। 227

अभिशाप तो मदिरा पीना है,
असुरों को प्रिय लगने वाली।
दुष्टा यह कृत्य कराती क्या,
है घोर हलाहल मधु प्याली। 228

कर में आदर से लेते जन,
फिर मुंह तक इसे झटक लाते।
मीठी लगवे कड़वी लगवे,
बड़ चाव से जाम गटक जाते। 229

अपने हाथों से निज पैरों,
ली मार कुल्हाड़ी क्यों तुमने।
फिर पैर कटे पर रोते क्यों,
क्या कहा बतादो था हमने। 230

छलनी हो जांय फेफड़े वे,
पर तजना नहिं महुआ वाली।
खटिया पर पड़े पड़े लेना,
यह प्राणों से प्रिय मधु प्याली। 231

कोई मति मंद तुम्हें रोके,
क्या बाप तुम्हारे की पीते।
कह दो तुम दुनियां दारी से,
हम पियें शान से हैं जीते। 232

दम से पीना जितनी दम हो,
चिंता न करो पीने वालो।
यह मुक्तिधाम पर छूटेगी,
जीलो सुख से जीने वालो। 233

जिसको जब जहां मिले जितनी,
बेधड़क लेव तुम गुड़वाली।
सामर्थ्य हो जितनी पी लेना,
शोभा पाये कर मधु प्याली। 234

घर से बाहर यदि जाना हो,
निज बैग में पहले रख लेना।
क्या पता है वहां मिली न मिली,
मेरे कहने पर चित देना। 235

तुम नहीं मानना बाप कहे,
या कहे मित्र या भाई कहे।
बहनोई कहे या बहिन कहे,
साला कहवे साराज कहे। 236

प्रण पर तुम खूब डटे रहना,
घरवाली रोके या साली।
यह भाग्यवान को रत्न मिले,
कहना कर में ले मधु प्याली। 237

अब तो मिलती मधु गली गली,
पाकिट में खुदा के बच्चे हों।
ला देंगे तुमको तुरंत वहां,
जो मित्र तुम्हारे सच्चे हों। 238

चाहो जब भी मिल जायेगी,
इक दिन तो सब को जाना है।
जो नहिं लेते क्या जाते नहिं,
पीने का मात्र बहाना है। 239

असमय में जाना हो तो भी,
है सीट वहां तुमको खाली।
पीते रहना हो दम जितनी,
यह बनी सुधा सम मधु प्याली। 240

पत्नी से सर्विस करवाना,
बस वेतन सब ले लेना तुम।
बच्चों के स्वास्थ्य अरु शिक्षा पर,
थोड़ा भी ध्यान नहिं देना तुम। 241

ठंडी में गरम न कपड़े हों,
तुम पीकर गरम बने रहना।
बीबी बच्चे कांपे तो क्या,
तुम धार पै ज्वान डटे रहना। 242

पायल चूड़ी ले बेच तुरत,
देना बाइफ को सौ गाली।
घर में हो आटा दाल नहीं,
लेते रहना प्रिय मधु प्याली। 243

गलियों में कहीं पड़े रहना,
सब जान जायेंगे कौन हो तुम।
कंकाल भले तन हो जाये,
टी.वी. हो गई फिर मौन हो तुम। 244

पीकर फटफटिया मस्ती में,
ट्रक खड़ा हो उसमें दे देना।
नीचे तुम ऊपर गाड़ी हो,
क्वाटर फिर वहां मंगा लेना। 245

बच्चे पापा की राह तकें,
चूड़ियां निहारे घरवाली।
जिंदा यदि अस्पताल पहुंचे,
तो वहां मंगाना मधु प्याली। 246

पीकर मतवाला एक हुआ,
घर की छत ऊपर चिल्लाया।
गाली देवों को दे देकर,
वह लगा पिछलने प्रभु माया। 247

फिरसिर के बल गिर पड़ा धरन,
हो गया राम का प्यारा वह।
फिर उठा नहीं उठ कहां गया,
घर भर का राज दुलारा वह। 248

जा रहे हजारों पी पीकर,
दे देकर घर भर को गाली।
छूटे धन धाम खजाना पर,
छूटे नहिं यह मधु प्याली। 249

पत्नी नैहर गई इक की,
पति को वियोग दुख साल गया।
कहते गम मिटा देत दारू,
बोतल वह पीकर हाल गया। 250

फिर और अधिक ली नहिं माना,
फिर से दो क्वाटर पी डाले।
वेसुध हो गया उठा नहिं फिर,
घर के सब बंद हुये ताले। 251

मैंना पिंजड़े को छोड़ गयी,
है पड़ा रहा पिंजड़ा खाली।
पत्नी छूटी घर छूट गया,
फिर छूट गई वह मधु प्याली। 252

मनचले चले कुछ पीने को,
सबने इक जगह खूब छानी।
वह जहर मिला था मदिरा में,
चिर नींद सो गये सब प्रानी। 253

दिन डूब गया निशि भी हो गई,
वे कोई भी घर नहीं गये।
खोजा तो बाहर पड़े मिले,
को जाने वे सब कहां गये। 254

बन मृत्यु सुरा उनकी आई,
बिलखें बच्चे अरु घरवाली।
मदिरा को कहो क्या बिगड़े,
वह है ज्यों की त्यों मधु प्याली। 255

लारी में साठ सवारी थी,
चालक ने मनकी पी लीनी।
छण एक को झपकी आई बस,
बस वृक्ष में जाके दे दीनी। 256

चालक तो पहुंचा रामपुरा,
दस बारह लेकर संग गया।
हाथ पैर टूटे कई के,
कई लोगों का उड़ होश गया। 257

आगे क्या और हुआ होगा,
ले खबर मीडिया लिख डाली।
इसकी जड़ में वह एक रही,
वह भरी हुई इक मधु प्याली। 258

पीने वालों का धर्म नहीं,
बस एक धर्म दारू पीना।
पीकर पर घर में घुस बैठे,
भूल गये मरना जीना। 259

घरवाले दौड़े पकड़ लिया,
दम से मालिस फिर खूब किया।
खाकी वर्दी को सौंप दिया,
चढ़ गया प्लास्टर देख लिया। 260

टूटी बत्ती कट गई नाक,
फोटू क्या गजब बना डाली।
पड़ गई छड़ें कर पैरों में,
हंस रही देखकर मधु प्याली। 261

दारू को पैसे मांगे तो,
अम्मा ने पैसे नहीं दिये।
प्रिय पुत्र हुये क्रोधित भारी,
पित मात से जमके झगड़ लिये। 262

गृहयुद्ध वहां तक जा पहुंचा,
लड़के ने ईंटा दे मारा।
गिर पड़ा पिता बेसुध भूपर,
हो गया राम का वह प्यारा। 263

माता को विधवा बना दिया,
नहिं मिली कभी फिर घरवाली।
रह गया कुंवारा हत्यारा,
नहिं मिली जेल में मधु प्याली। 264

दारू वालों के घृणित कृत्य,
लिखने को कलम तैयार नहीं।
काली करतूतें नेति नेति,
लिखने में है कुछ सार नहीं। 265

नहिं इनकी बहिन कोई होती,
भानेजन होती कोई नहीं।
नहिं चाची और भतीजी भी,
पुत्री का रिश्ता सोई नहीं। 266

मदिरा पीकर कूकर सूकर,
में गणना अपनी कर डाली।
पशु से बदतर ये भये नीच,
सब कृत्य कराती मधु प्याली। 267

मैं जानू अरु तुम जानो,
यह भी जानें वह भी जानें।
वारुणि यह नर्क नसैनी है,
सब जानें फिर भी नहिं मानें। 268

कट जावें, मिट जावें, मर जावें,
सड़ जांय दुर्दशा सब होती।
हो जावे जो कुछ होना हो,
बस दारू इनको प्रिय होती। 269

मां बाप की सौगन्ध कर डालें,
सुत, गंग की कसमें कर डाली।
फिर पीने लगे उसी दिन वे,
प्राणों से भी प्रिय मधु प्याली। 270

एक युवक अपने पितु को,
दारू पी गालीं सुना रहा।
सभ्रांत पिता वह शांत रहा,
सदमा उससे नहिं गया सहा। 271

गिरा भूमि पर बेसुध हो,
आ गई दौड़ तब घरवाली।
हार्ट फैल हो गया वहीं,
वह देता रहा खड़ा गाली। 272

हंसा उड़ गया कहां उसका,
जाने को बैठा किस डाली।
नहिं गया जलाने तात को वह,
कर लिये रहा प्रिय मधु प्याली। 273

इक युवक था आदी मदिरा का,
घर भरने रोका नहिं माना।
कर्जा कर लिया बहुत उसने,
झगड़ा घर में निसदिन ठाना। 274

कैरोसिन कुप्पी सिर पर से,
लीनी उड़ेल माचिस रगड़ी।
ज्वाला स्नान किया उसने,
प्राणों ने स्वर्ग गली पकड़ी। 275

धन्य धन्य है मदिरा यह,
तेरी लीला अनुपम आली।
अपराधों की तू अम्मा है,
हंसती रहती है मधु प्याली। 276

दारू पी घर भी बेच दिया,
चम्मच, लोटा, थाली बेची।
मैंदान में झुग्गी बना लई,
थी युवा सुनो बच्ची बेची। 277

सूखा सब लहू शक्ति खोई,
नारी जो करती मजदूरी।
लकड़ी, सब्जी, अरु दाल, मिर्च,
आटा की मांग न हो पूरी। 278

सबसे निंदित है भीख कर्म,
ले चला कटोरी कर खाली।
नर पहुंचा कहां कहां से है,
हंस रही देखकर मधु प्याली। 279

मिल जाते जो कुछ दाम उसे,
वह जुआ खेलने चला गया।
मिल गई मगौड़ी चाय कहीं,
सारा दिन उसमें भला गया। 280

मांगा खाया फिर जमा जुआ,
जीता हारा कुछ शंक नहीं।
जितनी मिल जाती पी लेता,
वे मिटें भाग्य के अंक नहीं। 281

दाव में त्रिया लगा देता,
कब गई नैहर घर घरवाली।
चलनी में दूध दुहे मूरख,
कहते कारण है मधु प्याली। 282

देखा इक मस्त नशा में था,
भूखा था रोड पर पड़ा हुआ।
पके आम दे दिये चार,
पीने को वह था अड़ा हुआ। 283

कर से निचोड़ कर पर रस ले,
निज तन पर मालिश कर डाला।
एक आम भी उसने नहिं खाया,
पथ पड़ा रहा पीने वाला। 284

फिर पता लगा नहिं कहां गया,
सच कथा काव्य में कथ डाली।
नर फल कर्मों का पाते सब,
आरोपित होती मधु प्याली। 285

इक अनुपम सुंदर लड़की थी,
अनुपमा नाम भी था उसका।
वह रति का रूप लजाती थी,
तन कनक वर्ण सम था उसका। 286

सुगठित शरीर नग नग सुंदर,
वर उसको सुंदर खोज लिया।
मनो काम–रति की जोड़ी,
विधि ने अनुपम संजोग दिया। 287

तिथि विवाह की निश्चित की,
सब साज सजे शोभा शाली।
बाजे बाजे डी.जे. बाजे,
दम से भी चली थी मधु प्याली। 288

बारात द्वार पर आई जब,
घोड़े नाचे संग लोग नचे।
था नशा चढ़ा मधु प्याली का,
नाचे झूमे जन खूब जचे।।289

युवकों–युवकों में कुछ ने,
कुछ गंदी हरकत कर डाली।
बढ़ गई बात बढ़ते–बढ़ते,
जूते बाजी संग दी गाली।290

बाराती और घराती सब,
भिड़ चले तन गई दो नाली।
दुल्हिन थी वह सब देख रही,
हंस रही थी केवल मधु प्याली।291

बिगड़ी सब बात दूध फाटा,
अब उससे मक्खन नहिं निकले।
अब शादी मुझे नहीं करना,
दुल्हिन के सजे भाव फिसले।292

समझा हारे सब सम्बन्धी,
वापिस बारात भी चली गई।
बा रात नहीं आने पाई,
मधु प्याली से वह छली गई।293

सम्मान गया अरमान गये,
यह रात आई सपनों वाली।
काम बना सब लो बिगड़ा,
बोलो कब कहती मधु प्याली।294

एक जगह बारात गई,
सब साज बाज बहु सजे वहां।
आतिशवाजी थी लाइट सजी,
सुरपुर से सब थे ठाट वहां। 295

दूल्हा दुल्हिन की गांठ जुड़ी,
परिक्रमा प्रथम नहिं हो पाई।
गिर पड़े चित्त दूल्हे राजा,
मदिरा से बेहोशी छाई। 296

जीजाजी को हो गया क्या,
कहती होने वाली साली।
दूल्हा के साथी बता चले,
इसने है ले ली मधु प्याली। 297

गठजुड़ा दुपट्टा ले दुल्हिन,
निज गृह के अंदर चली गई।
दी छोर गांठ पट फेंक दिया,
धोखा दे मैं क्या छली गई। 298

स्पष्ठ मना दुल्हिन करके,
बोली यह शादी नहिं होगी।
समझाया बहुत बड़ों ने तो,
दुल्हिन फिर बोली नहिं होगी। 299

वापिस बाराती चले जाओ,
क्रोधित हो बोली ज्यों काली।
कैसे सारा जीवन बीते,
जब है इसको प्रिय मधु प्याली। 300

उत में दूल्हे राजा के घर,
शहनाई बजे ढ़ोलक बाजे।
दुल्हिन के लिए चौक पूरें,
बहिनें गाना गावें ताजे। 301

फिर ट्यून बजी आ गया फोन,
सब नाच गान फिर बंद हुआ।
लौटी बारात नहिं हुआ ब्याह,
पग घुंघरू छोरी तुरत बुआ। 302

सब गुड़ गोबर हो गया सुनो,
डोली लौटी खाली खाली।
क्या क्या सपने सब चूर हुये,
यह बड़ी विकट है मधु प्याली। 303

पीते पीते बीमार हुआ,
कमजोर हुआ खटिया पकड़ी।
गुर्दा लीवर में हुई कमी,
जाचों से दवा हुई तगड़ी। 304

इधर उधर से कर्ज लिया,
निर्धन था पीने का आदी।
गहने जेवर बिक गये सभी,
छोटा घर था भई बरबादी। 305

आशा में वह भी बेच दिया,
पत्नी सच्ची भोली भाली।
क्या करें दिवाला सब निकला,
ले गई संग निज मधु प्याली। 306

किसकी माला अब जपे त्रिया,
विधवा की कौन सहाय करे।
है समाज कितना बिगड़ा,
विधवा का कोई न मान करे। 307

देखें कुदृष्टि से बहुतेरे,
क्या करे पिता भाई उसको।
जीवन साथी बिन पग पग पर,
कंटक ही कंटक थे उसको। 308

पुनर्विवाह कर पहुंचा दी,
जो लाड़ प्यार से थी पाली।
वे शीघ्र न जाते सुरपुर को,
यदि लेते नहिं यह मधु प्याली। 309

दिन रैन कटाकट चिकचिक हो,
पति पिये लात घूंसे मारे।
पत्नी रोके डंडा मारे,
पति बहुत पियक्कड़ थे प्यारे। 310

भाई बहिनों ने समझाया,
बहनोई समझा के हारे।
था प्रमुख काम मदिरा पीना,
पत्नी कब तक निज व्रत धारे। 311

मात पिता के घर सारी,
वाकी सब उम्र विता डाली।
रह गये अकेले दुर्गति में,
संगिन केवल वह मधु प्याली। 312

रह गये क्वांरे बहुतक हैं,
जिनको पीने की आदत है।
सम्मान मान नहिं रहा सुनो,
जिनके जीवन को लानत है। 313

नित प्रति झगड़ा इससे उससे,
आये दिन पकड़े जाते हैं।
हल्ला करते कर शांति भंग,
डंडे जूते नित खाते हैं। 314

पीकर इक दिन अपने घर में,
गुस्से में आग लगा डाली।
जल गये चार छै घर पर के,
ले गई जेल वह मधु प्याली। 315

दिन में श्रम करना पड़ता,
आ गई याद उनको नानी।
निशि में तारे वे गिनें वहां,
पहले रोकी थी नहिं मानी। 316

जेल से छूटा जब वह तो,
ज्वानी की बगिया उजड़ गई।
हो गया बृद्ध सब शक्ति गई,
चमड़ी तन की सब सिकुड़ गई। 317

गोरा तन सुंदर था उसका,
चेहरे पर थी सुंदर लाली।
काला चेहरा लेकर लौटा,
बर्बाद कर चुकी मधु प्याली। 318

पत्नी से लड़ता था पीकर,
नर एक सुनो पीने वाला।
आटा चावल को रुपये दिये,
पर चला गया वह मधुशाला। 319

बैठे भूखे थे बच्चे सब,
आया घर देता बहु गाली।
पत्नी ने कहा उचित फिर भी,
आ गया क्रोध फेंकी थाली। 320

दौड़ा दौड़ा सल्फास उठा,
गोली सब मूर्ख निगल डाली।
नहिं संभल सका चल बसा सुनो,
क्या क्या कर देती मधु प्याली। 321

गाथा हैं पीने की अनंत,
इक पीकर वन की ओर गया।
जो और लिये था पी डाली,
नहिं होश रहा किस ओर गया। 322

कुछ सुध आई जल पीने की,
था कूप वहां नहिं संभल सका।
गिर गया कुये में पड़ा रहा,
कुछ पता किसी को चल न सका। 323

सड़ गयी सुना था उतराई,
वह लाश थी मद पीने वाली।
क्या क्या गति दारू से होती,
मुस्काती हंसती मधु प्याली। 324

चल बसा कोई दारू पीकर,
सुनसान सघन वन में जाके।
आखों को कौये कोल रहे,
खा रहे गिद्ध तन को आके। 325

नहिं पता किसी को लगा कहीं,
कंचन सा तन कंकाल बना।
वर्षों के बाद कुछ अस्थि मिली,
पीने से यों कुछ हाल बना। 326

सच झूंठा जाने राम लला,
जनहित में कथना कथ डाली।
पीने वालों को स्वर्गिक सुख,
यह नित देती है मधु प्याली। 327

इक पीने वाले ने अपनी,
बीबी संग मासुम मार दिये।
क्रोधांध पिये था मदिरा वह,
हंसिया से तीन संहार दिये। 328

फिर स्वयं भी विष का पान किया,
सब खतम कहानी कर डाली।
क्या करती कुछ भी कर न सकी,
बस स्वर्ग गई वह घरवाली। 329

ज्वानो जा पियो चाव से तुम,
नई बदन पर छाई रहे लाली।
तुम भी मुस्काते रहो सदा,
यह भी मुस्कावे मधु प्याली। 330

लेखनी खंड

लिखने को बिन्दु हजारों हैं,
पर देश का हित चिंतन जिसमें।
जन हित का होवे शुद्ध लक्ष्य,
है सफल लेखनी बस उसमें। 331

जिसको जो कुछ खाना पीना,
है उसका यह अधिकार बना।
धारा समाज की स्वस्थ्य रहे,
खाओ नहिं करता कोई मना। 332

दारू संग घातक दृव्य सभी,
लो खूब मनाओ दीवाली।
यह कृत्य राष्ट्रीय मन मानो,
कम जनसंख्या हो लो मधु प्याली। 333

अपना हित अनहित सब जानें,
नर तन देवों को दुर्लभ है।
अनमोल दिव्य तन कंचन सा,
है दिया प्रकृति प्रभु ने शुभ है। 334

मिट्टी के मोल न डालो,
कर करके करतूतें काली।
कलम यही बस कहती है,
मानव बन पा लो खुशहाली। 335

यत्र, तत्र, सर्वत्र पड़े,
मिट्टी सोना भर भर डाली।
गृहण करो जो मन चाहे,
है सुधा संग वह मधु प्याली। 336

रोगी कुपथ्य है मांग रहा,
भेषज कट चतुर वैद्य देता।
कल्याण है जिसमें छिपा हुआ,
लेने की परामर्श देता। 337

मानो न मानो क्या करना,
होता है वही जो होना है।
जो लिखा भाग्य में मिटे नहीं,
फल कर्मों का भी ढोना है। 338

जय बोलो सभी लेखनी की,
है यही भाग्य लिखने वाली।
जय हो उस रतन वारुणि की,
जय जय बोलो बस मधु प्याली। 339

शक्ति खंड

है ब्रह्म अपूर्ण उस शक्ति बिना,
निश्चित ही शक्ति शक्तिशाली।
नर है अपूर्ण बिन नारी के,
नारी नर से गरिमा वाली। 340

नारी माता है देवी है,
भगिनी है पुत्री सुखदाई।
अर्द्धांगिन है सह धर्मिणी है,
सहचरी है गृहणी कहलाई। 341

नारी नर बिना निराश्रय है,
अनुसूइया शक्ति पुंज वाली।
सावित्री सती पुनीता है,
समझो वह नहिं है मधु प्याली। 342

सम्मान पात्रा अबला नहिं,
कंधे से कंधा मिला चलती।
ग्राम सभा से संसद तक,
जा पहुंची खान बनी बल की। 343

पति परमेश्वर से त्रासित हैं,
सहसों समाज में बालायें।
सरकार से, न्याय की की गुहार,
क्या क्या दुख पाती महिलायें। 344

जिनके पति बहुत पियक्कड़ हैं,
घर में निर्धनता भई काली।
गाली सुनती, पिटतीं रहतीं,
पति गले लगायें मधु प्याली। 345

प्याली यह उनकी सौतन बन,
दिन रैन कष्ट बहु देती है।
मदिरालय में बैठी ऐठी,
पैसा वह सब हर लेती है। 346

संगठन बनाकर उठ बैठी,
दुर्गा बन लक्ष्मी बाई चलीं।
कस फेंटा बनी वीर वाला,
लाठीं ले ले मैदान चली। 347

मदिरालय ठेकों पर पहुंचीं,
सड़कों पर कोपी बन काली।
फोड़ी बोतल तोड़ी दुकान,
दी कुचल उठाके मधु प्याली। 348

गलियों में मदिरा कीच मचा,
शासन सिंहासन हिला दिया।
पतियों से पीड़ित इन सबने,
मिल जोर का डंका बजा दिया। 349

ठेके मदिरा के हुये बंद,
ताले लग गये दुकानों में।
ठेकेदारों को सबक सिखा,
पहुंची दफतर में थानों में। 350

पेटी हट गई मुहालों से,
ये कठिन प्रतिज्ञा कर डाली।
खाली दुकान वह पड़ी हुई,
थी जहां महकती मधु प्याली। 351

फाटक तोड़ा शीशे फोड़े,
क्वाटर न यहां बिक पायेगा।
जब बांस ही होगा लगा नहीं,
फिर वंशी कौन बजायेगा। 352

कुछ विनय करी कुछ बुद्धि लगा,
पतियों को कई सुधारा है।
कुछ संभल गये कुछ बंद हुये,
संगठन बना ललकारा है। 353

मदिरालय बंद करा दीने,
पतियों की उतर गई लाली।
कुछ पैसे बचने लगे सुनो,
वह रही ललकती मधु प्याली। 354

ऐसी बालायें धन्य धन्य,
पतियों की प्याली बंद हुई।
हट गई दुकानें मदिरा कीं,
तू तू मैं मैं भी बंद हुई। 355

सब दुख की खान है मदिरा यह,
अपराधों की दादी नानी।
केंसर का दादा धूम्रपान,
सब नशा नाश की जड़ जानी। 356

बेचैन कोई नहिं होगा अब,
सब सुखी बजायेंगे ताली।
लम्बा जीवन सब जीवेंगे,
यदि दूर वह मधु प्याली। 357

सार खंड

प्राणी जीवन का लक्ष्य एक,
दुःख की निवृत्ति हो सुख आये।
पशु , पक्षी, कीट, पतंगे सब,
बोलो किसको नहिं सुख भाये।।358।।

जलचर, थलचर, नभचर सारे,
मधु पाने हित 'बेचैन' यहाँ ।
मधु के ही लिए अथक श्रम कर,
सब व्यस्त दिखते जीव यहाँ।।359।।

क्या-क्या नहिं कष्ट उठाते जन,
नित बाग सींचता है माली।
करता उद्योग रैन दिन जन,
कब हाथ लगे वह मधुप्याली।।360।।

मधु खोज–खोज जन त्रस्त रहें,
इक बूंद प्राप्त क्या कर पायें ।
सब रहे तरसते जीवन भर,
सब खाली हाथ चले जायें।।361।।

नव तन पाकर नर पुनः–पुनः,
आते फिर जाते कहाँ कहो ?
परमाणु भी मधु का मिला नहीं,
कितने तन धारे यहाँ अहो।।362।।

एक बिन्दु मधु यदि मिल जाती,
छाती परमानन्द की लाली।
उस पथ से जन–मन भटक गया,
जिस पथ पर पग–पग मधुप्याली।363।

अच्छा कंचन सा बँगला पा,
सब भौतिक सुख हैं प्राप्त किये।
छप्पन भोजन पा रहे नित्य,
आभूषण धारण अमित किये।364।।

मणि माणिक हीरों रत्नों को,
धारण कर आनंद छाया है ।
पहने मन–मन के दिव्य वस्त्र,
बाहर समस्त सुख पाया है।365।।

नहिं मिला मधुर फल एक कहीं,
सब तरू देखें डाली–डाली ।
जी चाहा जिसको प्राप्त किया,
पर पा न सका वह मधु प्याली।366।।

महलों में, असन बसन में अरु,
ऐश्वर्य में मधु ना कहीं मिली ।
षट् रस में, माया में खोजी,
फूलों में खोजी कली-कली।367।।

सौन्दर्य में षट पद सा होकर,
नव कली-कली के पास गया ।
जिस मधु की चाह थी नहीं मिली,
संध्या हो गई निराश गया ।368।।

सब भोग विलास किये जी भर,
यह आनन्द सब निकले जाली ।
पछताया मल-मल हाथ यहाँ ,
नहिं हाथ लगी वह मधुप्याली।369।।

लख चौरासी जीवों में,
नर देह बड़ी दुलर्भ जानी ।
पाकर, सुध-बुध सब भूल गया,
बन गया मनुज कामी मानी।370।।

हीरा तज केकड़ उठा लिया ,
भ्रम में संभाल कर रखे रहा ।
सब सपने में आनन्द मिला,
जागा नहिं खाली हाथ रहा।371।।

खेलों में, दारा में, घर में,
यह सारी उम्र बिता डाली ।
नर रहा सोचता जीवन भर,
विष मिला, मिली नहिं मधु प्याली।372।।

करुणा अनंत की याचक बन,
मांगो, निश्चय मिल जायेगी ।
यह छलना, माया की जाली ,
जो यत्न करो हट जायेगी।373।।

यह बिन्दु सिन्धु में मिल करके ,
वह सिन्धु स्वयं बन जायेगी ।
साधना सभी जीवन भर की,
तब फली भूत हो जायेगी ।374।।

बेचैन' शांति मन में होगी ,
वांछित सुवस्तु तुमने पाली ।
निधि से रस कलश मिलेगा वह,
भर-भर के पीना मधुप्यानी।375।।

जीवन का सार आनन्द प्राप्ति,
है लक्ष्य यही माना सबने ।
सुरभित सुमनों में पायानहिं ,
खोजा वन उपवन में सबने।376।।

झरनों, तालाबों, नदियों की ,
कल-कल में खोजा मिला नहिं।
मखमली घास पर मुक्त-मुक्त,
दे सके आनन्द अणु मात्र नहीं।377।।

देखा नभ चाँद सितारों में,
छानी अरुणोदय की लाली ।
सर के सरसिज में मिला नहीं,
ली दुक्ख मिटाने की मधु प्याली।378।।

मधु मय षोडषवय की वाला ,
के मधु अक्षरों में भटक गया ।
मधु प्याली लौल कपोल जान,
नर भव वैभव में अटक गया।379।।

नर रहा देखता सपना यह ,
जीवन भी जिसमें सटक गया।
लौकिक माया–मधु प्याली में,
सुंअना सेंमल में भटक गया।380।।

यदि एक बूंद भी मिल जाती ,
छा जाती मस्ती मतवाली ।
उस ओर न देखा नेत्र खोल,
थी जहां अलौकिक मधु प्याली।381।।

विभ्रम, माया, ऐश्वर्य सभी ,
सब भौतिक सुख जाना जाली।
मृग तृष्णा भ्रम में भ्रमित रहा,
इह लोक में खोजे मधु प्याली।382।।

उस द्वार पै गया नहीं जगजन,
मधु का अनंत जहाँ सागर है।
कर त्याग और तप श्रम अपार,
मधु प्याली पाता नागर है।383।।

सब समष्टि का सकल सार,
मिल जाय अलौकिक खुशहाली,
'बेचैन' न कोई भी होगा ,
जो प्राप्त करे वह मधु प्याली।384।।

---000---

कीर्तिशेष डॉ. सियाराम शरण शर्मा
(शोध पर्यवेक्षक)

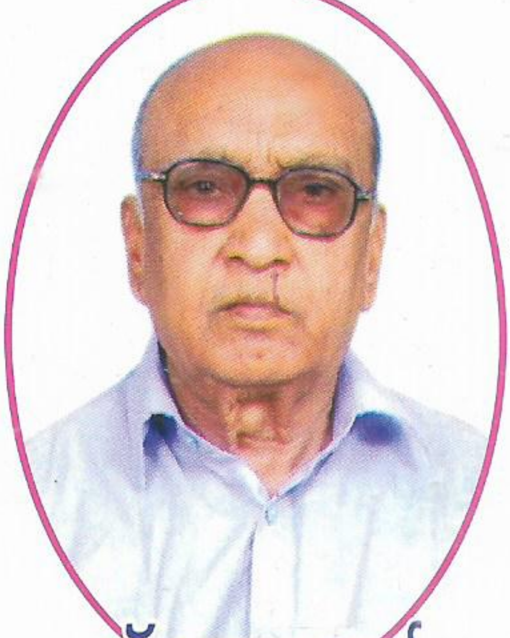

डॉ. दयाराम वर्मा
(शोधार्थी) पी.एच.डी.

डॉ. बेचैन के द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ पुस्तिकायें

1- बुन्देली बताशा
2- मस्ताना ख्याल
3- फाग रस खान छंद
4- गारी मनभावन
5- घरेलू चिकित्सा दोहावली
6- वर्मा इंगलिश गाइड
7- दानलीला व गौरी चालीसा
8- बुन्देली चौकड़िया सागर
9- मधुप्याली (खड़ी बोली खण्ड काव्य) प्रकाशित
10- झांसी जनपद के अज्ञात लोककवि (बुन्देली शोध प्रबन्ध) अप्रकाशित
11- बंग-विजय (अप्रकाशित)
12- 'नई टकसार' पूज्य पिता स्व. श्री रामसहांय कारीगर (आशु कवि) की पांण्डु लिपि को पुस्तकाकार करके संपादन व प्रकाशन

परम पूज्यनीया माता जी
स्व. श्री लाड़ली देवी

पी.एच-डी. की उपाधि लिए
डॉ. डी.आर.वर्मा 'बैचेन' 1988

डॉ. डी. आर. वर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी शिक्षाप्रेमी श्रीमती फूलवती वर्मा
(गरीबों को आजीवन निःशुल्क शिक्षण)

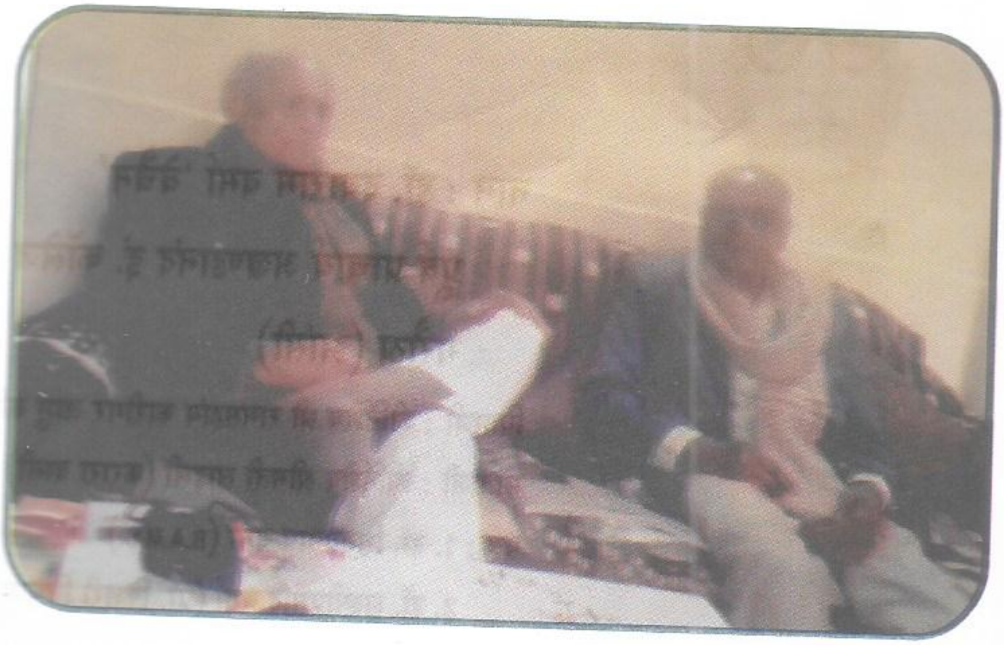

डॉ. रामनारायण शर्मा को काव्य पाठ सुनाते
डॉ. डी.आर. वर्मा 'बैचेन'

रजत जयंती बुन्देली विकास परिषद् पर 'बुन्देली बताशा पत्रिका'
का विमोचन करते डॉ. प्रभाकर जी एवं शिवाजी चौहान जी
वर्ष - २०१२

: परिचय :

नाम : डॉ. दयाराम वर्मा 'बेचैन'

पूर्व प्राचार्य अखण्डानंद इं. कॉलेज

गरौठा (झांसी)

पिताजी : कीर्तिशेष श्री रामसहांय कारीगर आशु कवि बुन्देली

माताजी : कीर्तिशेष श्रीमती लाड़ली (करारा वाली)

पुत्र : 1. डॉ. शिवप्रताप वर्मा (B.A.M.S.)

2. डॉ. लक्ष्मीप्रसाद वर्मा (प्रो. फिशरी विभाग फेजाबाद)

भ्राता : 1. श्री हरीदास ।

2. सेवाराम वैद्य ।

3. डॉ. भरतराम (M.B.B.S.) सेवा.स्वा.निदेशक उ.प्र.सरकार

भतीजे : इं. सुरेन्द्र कुमार से.नि. ।

इं. राजेन्द्र कुमार ।

इं. महेन्द्र कुमार (केन्द्रीय सर)

इं. धर्मेन्द्र कुमार ।

अनिल कुमार (डिवी.मैने. यू.को. बैंक दिल्ली)

डॉ. वी.वी. वर्मा

पत्नी : श्रीमती फूलवती वर्मा (शिक्षा प्रेमी)

विगत 10 वर्षों से फूलवती कोचिंग संस्थान, स्यावरी द्वारा गरीब एवं कन्याओं को शिक्षा ग्रहण करवा रही है ।

निवास : ग्राम व पोस्ट – स्यावरी

तहसील – मऊरानीपुर

जिला – झाँसी (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : 9794419115

मुद्रक : उत्तम क्वालिटी-उत्कृष्ट सेवायें - जयभारत प्रेस, मऊरानीपुर